गंगा, यमुना व गोमती समेत 11 नदियों पर बनेंगे लिफ्टिंग ब्रिज

जल परिवहन के लिए पहले चरण में गाजीपुर, बलिया व वाराणसी से होगी शुरुआत

चंद्रभान यादव

लखनऊ। प्रदेश में जल परिवहन को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके तहत गंगा- यमुना सहित कई नदियों पर बैस्क्यूल ब्रिज (लिफ्टिंग ब्रिज) का निर्माण होगा। इसकी शुरुआत गंगा नदी से होगी। पहले चरण में गाजीपुर, बलिया और वाराणसी में इस तरह के पुल बनाए जाएंगे। इसके बाद जरूरत के हिसाब से अन्य नदियों को शामिल किया जाएगा।

जल परिवहन के लिए अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण का गठन किया जा चुका है। अब प्राधिकरण की ओर से विभिन्न स्तर पर संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। इसके लिए 11 नदियों का भी चयन कर लिया गया है। इन नदियों पर विभिन्न स्थानों पर बैस्क्यूल ब्रिज बनाए जाएंगे। ताकि जल परिवहन के दौरान आवागमन में किसी तरह की बाधा न आए।

प्रदेश में इसके लिए गंगा नदी को मुख्य रूप से चुना गया है। इसमें प्रयागराज, वाराणसी से गाजीपुर होते हुए हल्दिया तक का रूट तैयार है। अगले चरण में इसे कानपुर के रास्ते फर्रुखाबाद तक बढ़ाने की तैयारी है। इसके अलावा यमुना, सरयू व घाघरा, गोमती, चंबल, बेतवा, वरुणा, कर्मनाशा, राप्ती, मंदाकिनी और केन नदी में जल पर्यटन की संभावनाएं तलाशी जाएंगी। प्राधिकरण की ओर से अब इन नदियों पर विभिन्न स्थानों पर बैस्क्यूल ब्रिज बनाने की भी तैयारी है। पहले चरण में गंगा नदी पर गाजीपुर, बलिया और वाराणसी में पुल का निर्माण कराया जाएगा। इसके लिए सर्वे शुरू हो गया है। पुल बनने के बाद उसके संचालन, देखरेख आदि का खर्च दो साल तक केंद्रीय जल मंत्रालय करेगा। इसके बाद राज्य सरकार को सौंप दिया जाएगा।

फाइल फोटो

दो वर्ष में होगी कार्मिकों की व्यवस्था

केंद्रीय जल मंत्रालय की ओर से दिए गए प्रस्ताव में कहा गया है कि दो वर्ष तक ब्रिज की देखरेख, संचालन और कार्मिकों की व्यवस्था की जाएगी। पुल से संबंधित सभी खर्च केंद्रीय जल मंत्रालय उठाएगा। इस बीच राज्य सरकार के साथ मिलकर कार्मिकों के प्रशिक्षण आदि का कार्य पूरा होगा। दो वर्ष का समय बीतने के बाद ये तीनों पुल प्रदेश सरकार के दायरे में आ जाएंगे। इसके बाद राज्य सरकार अपने संसाधनों से पुल का संचालन करेगी। पुल से गुजरने वाले जल पोत, स्टीमर आदि से कितना शुल्क लिया जाएगा, अभी यह तय नहीं है।

क्या होता है लिफ्टिंग ब्रिज

बड़ी नावें अथवा जलपोत आने पर यह पुल बीच से खुल कर ऊपर हो जाता है। इसके बीच में एक कपाट होता है, जो पुल को ऊपर उठा लेता है। जल पोत अथवा नाव के आगे जाने के बाद यह फिर से अपने स्थान पर फिक्स हो जाता है। ऐसे मे उसके ऊपर से वाहन गुजरने लगते हैं। आस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन आदि राज्यों में इस तरह के तमाम पुल हैं। भारत में कोलकाता के किडरपोल, केरल के कोच्चि के बाद तमिलनाडु के रामेश्वर में पम्बन ब्रिज का निर्माण इसी तर्ज पर किया गया है।